शासकीय मोतीलाल विज्ञान महाविद्यालय की पचास वर्ष की स्वर्णिम यात्रा

आयोजन समिति एवं पूर्व विद्यार्थी संगठन के सदस्यों के सहयोग से संकलित

शासकीय मोतीलाल विज्ञान महाविद्यालय मध्यप्रदेश के प्रमुख महाविद्यालयों में से एक है, जहाँ केवल विज्ञान संकाय में अध्ययन–अध्यापन होता है। भोपाल के प्रसिद्ध छोटे तालाब के किनारे लगभग पन्द्रह एकड़ के नैसर्गिक सौन्दर्य के मध्य यह महाविद्यालय स्थित है।

इस महाविद्यालय के स्थापना की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अत्यन्त रोमांचक एवं गौरवशाली रही है। देश के प्रथम नागरिक राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा कॉलेज भवन का शिलान्यास 9 जुलाई 1960 को किया गया था। देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा 7 नवम्बर 1960 को इस भवन का लोकार्पण कर उनका नामकरण उनके पिता एवं प्रसिद्ध बैरिस्टर मोतीलाल नेहरू के नाम से किया गया।

महाविद्यालय का परिसर अत्यन्त विशाल है, इसके मुख्य द्वार से झील का किनारा दिखाई देता है जो, अपने आप में एक विहंगम तथा दुर्लभ दृश्य है। महाविद्यालय के परिसर में 6 भवन खण्ड हैं। इनका नामकरण देश की महान विभूतियों की स्मृति में किया गया है। स्थापना के समय महाविद्यालय में 7 विषयों में अध्यापन की व्यवस्था थी और लगभग 1000 विद्यार्थी पढ़ते थे। आज यहाँ 2200 विद्यार्थी हैं। आठ विषय यहां पढ़ाये जाते हैं। दस विषय में स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययन की व्यवस्था है। महाविद्यालय के 95 प्रतिशत प्राध्यापक डॉक्टरेट की उपाधि से विभूषित हैं और शोधकार्य से जुड़े हुए हैं। कई शोध परियोजनाओं पर कार्य चल रहा है। अनेक विद्यार्थी शोध –छात्र के रूप में पी. एच–डी. की उपाधि हेतु विश्वविद्यालय में पंजीकृत हैं। अनेक प्राध्यापक शोधपत्र वाचन के लिये विदेश भी गये।

इस महाविद्यालय में प्रवेश प्राप्त विद्यार्थियों के बहुआयामी एवं सर्वांगीण विकास हेतु प्रायोगिक शिक्षण केसाथ–साथ उन्हें अनुशासित व शिक्षित नागरिक बनाने के लिये नेशनल क्रेडिट कोर की वायु, जल व थल सेना की तीनों इकाईयाँ सक्रिय रूप से, तीन एन.सी.सी. अधिकारियों के नेतृत्व में प्रभावशील है, जहां प्रतिवर्ष लगभग 250 अनुशासित कैडेटस तैयार होते हैं। इनमें से चयनित कैडेटस नई दिल्ली में प्रतिवर्ष आयोजित आर.डी.सी. परेड में महाविद्यालय का एवं प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हैं। अन्य अनेक कैडेटस विद्यार्थी थल सेना, वायु सेना एवं नौसेना के राष्ट्रीय केम्प में भाग लेते हैं और रक्षा सेवाओं में भी चयनित हुए हैं। इन कैडेटस ने महाविद्यालय का नाम राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाया है। कारगिल में शहीद हुए मेजर अजय प्रसाद ने यहीं से शिक्षा प्राप्त की है। वर्ष 1990 में मिग–21 उड़ाते समय शहीद हुये अनिल राज भी इसी महाविद्यालय के विद्यार्थी हुआ करते थे। शहीद कर्नल श्रेयान्स गांधी भी यही के मेधावी विद्यार्थी रहे है।

विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना एवं सामाजिक सरोकार की भावना भरने के लिये राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) प्रभावी रूप से इस महाविद्यालय में कार्यशील है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी वर्ष से प्रारंभ हुई इस योजना के अंतर्गत विद्यार्थियों ने श्रमदान एवं लोक जागरण द्वारा अनेक गाँवों के विकास में योगदान दिया है।

विद्यार्थियों के शारीरिक विकास हेतु आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित जिम्नेजियम और सभी प्रकार की खेल सामग्री तथा विशाल खेल मैदान यहाँ उपलब्ध है। भारतीय हॉकी टीम के प्रसिद्ध गोलकीपर श्री मीर रंजन नेगी यहीं के विद्यार्थी रहे हैं।

शैक्षणिक गतिविधियों में गायन, वादन, ड्राइंग, पेंटिंग, सांस्कृतिक गतिविधियों आदि में भी नियमित कार्यक्रम आयोजित करके नैसर्गिक प्रतिभा को सराहा और निखारा जाता है। साहसिक व सामाजिक चेतना के विकास के लिये निबंध लेखन, भाषण कविता–पाठ, वाद–विवाद, प्रश्न मंच आदि का भी आयोजन किया जाता है।

50 वर्षीय शैक्षणिक यात्रा के दौरान इस महाविद्यालय ने अनेक उल्लेखनीय मील के पत्थर स्थापित किये हैं, अभी भविष्य में और भी स्थापित किये जाने शेष हैं।

विगत 50 वर्ष में एक लाख से अधिक विद्यार्थियों ने प्रदेश, देश एवं विदेशों में इस महाविद्यालय का नाम गौरवान्वित किया है। साथ ही सेवा एवं व्यवसाय के लगभग सभी क्षेत्रों विशेष रूप से राज्य एवं राष्ट्रीय राजनीति, राष्ट्रीय खेल, प्रशासनिक क्षेत्र, रक्षा सेवा, उच्चशिक्षा, चिकित्सा सेवा, न्यायलयीन सेवा, व्यवसाय एवं उत्कृष्ट शोध (वैज्ञानिक) के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर महाविद्यालय एवं प्रदेश का गौरव बढ़ाया है। इनमें से कुछ प्रख्यात हस्तियों का व्यक्तिगत उल्लेख करना गर्व का विषय है।

विशेष : पाँच दशक वर्ष का इतिहास संकलित करना वास्तव में एक मुश्किल, बड़ा कार्य है, फिर भी इसे संकलित करने का प्रयास किया गया है। लेकिन हम कहाँ तक सफल हो सके हैं यह कहना मुश्किल है। कई महान विभूतियों के नाम हो सकता है यहाँ उल्लेखित न हो सके, क्योंकि वह नाम हमारी जानकारी में नहीं आ सके हैं। यह संकलन कार्य सतत् चालू रहेगा। पाठकों एवं पूर्व विद्यार्थियों से अनुरोध है कि जिन किसी प्रमुख व्यक्ति का नाम यहा प्रकाशित होने से छूट गया हो तो उसकी सूचना संगठन को आवश्यक रूप से दें ताकि उनके कार्यकलापों को अगली पत्रिका में प्रकाशित किया जा सके इस पाँच दशकों में महाविद्यालय के प्राचार्यगणों छात्रसंघ अध्यक्षों एवं विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रतिभावान प्रमुख नामों का उल्लेख अगले पृष्ठों पर किया जा रहा है।, सभी के नाम यहां प्रकाशित करना संभव नहीं है अतः सिर्फ प्रमुख नामों को प्रकाशित किया जा रहा है।